प्रातः क्लास 4/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। रूहानी बाप तुम बच्चों को स्वदर्शनचक्रधारी बनाते हैं। अर्थात् तुम इस चक्र को जान जाते हो। आगे नहीं जानते थे। बाप द्वारा अभी तुमने जाना है। 84 जन्मों के चक्र में तुम आते हो ज़रूर। तुम बच्चों को 84 चक्र का नॉलेज देता हूँ। मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ; परंतु प्रैक्टिकल में हो तुम, हम तो 84 के चक्र में आता नहीं हूँ। तो इससे समझ जाना चाहिए शिवबाबा में सारा ज्ञान है। वह 84 के चक्र में नहीं आते हैं; परंतु उनमें ज्ञान सारा है। तुम जानते हो हम ब्राह्मण अभी स्वदर्शनचक्रधारी बनते हैं। बाबा नहीं बनते हैं। फिर उनमें यह अनुभव कहाँ से आया? अनुभव तो हमको प्राप्त होता है। बाबा कहाँ से अनुभव लाता है जो हमको सुनाते हैं, प्रैक्टिकल में अनुभव हो जाना चाहिए। बाप कहते हैं मुझे ज्ञानसागर कहते हैं; परंतु मैं तो 84 जन्मों के चक्र में आता नहीं हूँ, फिर मेरे में यह ज्ञान कहाँ से आया? टीचर पढ़ाते हैं तो ज़रूर खुद पढ़ा हुआ है ना। यह शिवबाबा कैसे पढ़ा? उनको कैसे 84 जन्मों के चक्र का मालूम पड़ा, जबकि खुद ही 84 जन्मों में नहीं आते हैं। बाप बीज रूप होने कारण जानते हैं। खुद 84 के चक्र में तो नहीं आते हैं; परंतु तुमको समझाते हैं। यह भी कितना वण्डर है! ऐसे भी नहीं बाप कोई शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। यह बातें तो शास्त्रों में भी लिखी हुई नहीं हैं। इसमें तो गपोड़े हैं। कहा जाता है ड्रामा अनुसार उनमें यह नॉलज नुँधी हुई है, जो तुमको सुनाते रहते हैं। तो वण्डरफुल टीचर हुआ ना! वण्डर खाना चाहिए। इसलिए इनको बड़े-2 नाम दिये हैं। ईश्वर, प्रभु, अंतर्यामी आदि-2। तुम वण्डर खाते हो ईश्वर में यह सारी नॉलेज कैसे भरी हुई है। उनमें आई कहाँ से जो हमको समझाते हैं। उनका तो कोई बाप भी नहीं जिससे जन्म लिया हो व समझा हो। तुम सभी भाई-2 हो। वह एक कैसे तुम्हारा बाप निमित्त बना हुआ है। बीज रूप है। कितनी नॉलेज बैठ बच्चों को सुनाते हैं। कहते हैं 84 जन्म मैं नहीं लेता हूँ, तुम लेते हो। तो ज़रूर प्रश्न उठेगा ना बाबा आपको मालूम कैसे पड़ा? बाबा कहते हैं–बच्चे, अनादि ड्रामा प्लैन अनुसार मेरे में पहले से ही यह नॉलज है, जो तुमको पढ़ाता हूँ। इसलिए ही इनको ऊँच ते ऊँच भगवान कहा जाता है। खुद चक्र में नहीं आते; परंतु उनमें सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत की नॉलज है। तो तुम बच्चों में कितनी खुशी होनी चाहिए! उनको 84 के चक्र का नॉलेज कहाँ से मिला? तुमको तो मिला बाप से। बाप में ओरिजनल नॉलेज है ही। उनको कहा ही जाता है नॉलेजफुल। कोई से पढ़ते भी नहीं हैं तो भी उनको ओरिजनल मालूम है। इसलिए नॉलेजफुल कहा जाता है। यह वण्डर है ना! इसलिए उनकी ऊँच ते ऊँच बड़ाई गाई जाती है। बच्चों को वण्डर लगता है बाप पर। उनको क्यों नॉलेजफुल कहा जाता, एक तो यह समझने की बात है। दूसरी फिर क्या बात है, यह चित्र तुम दिखाते हो तो कोई पूछेंगे ब्रह्मा में भी अपनी आत्मा होगी और यह जो ना॰ बनते हैं उनमें भी अपनी आत्मा होगी। दो आत्माएँ हैं ना। एक ब्रह्मा की, एक ना॰ की; परंतु विचार करेंगे तो यह कोई दो आत्माएँ नहीं हैं। आत्मा एक ही है। यह एक सैम्पल दिखाया जाता देवता का। यह ब्रह्मा सो विष्णु अर्थात् ना॰ बनते हैं। शंकर का तो बताया वह आत्मा ही नहीं, शरीर है। शरीर ही नहीं है, तो आत्मा भी हो नहीं सकती। इसको कहा जाता है गुह्य बातें। बाप कहते हैं तुमको मैं गुह्य नॉलेल सुनाता हूँ, और कोई पढ़ा न सके सिवाय बाप के। तो ब्रह्मा और विष्णु के कोई दो आत्माएँ नहीं हैं। वैसे ही सरस्वती और लक्ष्मी की। तो दोनों की दो आत्माएँ हैं या एक? आत्मा एक ही, शरीर दो हैं। यह सरस्वती ही लक्ष्मी बनती है। इसलिए एक ही आत्मा गिनी जावेगी। 84 जन्म एक ही आत्मा लेती है। यह बड़ी ही समझ की बात है। ब्राह्मण सो देवता, देवता सो क्षत्रिय बनते हैं। आत्मा एक ही, शरीर दूसरा लेती है। ये सैम्पल दिखाया जाता है कैसे ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। हम सो ब्राह्मण, फिर हम सो क्षत्रिय..... इनका अर्थ कितना अच्छा है। इनको कहा जाता है गुह्य-2 प्वाइंट। इसमें भी पहले तो यह समझ चाहिए, हम एक बाप के बच्चे हैं। सभी आत्माएँ असल में परमधाम के रहने वाली हैं। यहाँ पार्ट बजाने आती हैं। यह खेल है। बाप तुमको इस खेल का समाचार बैठ सुनाते हैं। बाप ओरिजनल जानते ही हैं। उनको कोई ने सिखाया नहीं है। इस 84 के चक्र को

वह जानते ही हैं, जो इस समय तुमको सुनाते हैं फिर तुम भूल जाते हो। फिर उनका शास्त्र कैसे बन सकते? बाप तो कोई शास्त्र पढ़ा हुआ नहीं है। कैसे आ करके नई-2 बातें सुनाते हैं। आधा कल्प है भक्ति मार्ग। यह बातें भी शास्त्रों में नहीं हैं। यह शास्त्र भी ड्रामा अनुसार भक्तिमार्ग में बने हैं। तुम्हारी बुद्धि में शुरू से लेकर अंत तक इस ड्रामा की कितनी बड़ी नॉलेज है। इनको ज़रूर मनुष्य तन का आधार लेना पड़े। शिवबाबा इस ब्रह्मा तन में बैठ यह सृष्टि चक्र का नॉलेज देते हैं। मनुष्यों ने तो गपोड़े लगाये सृष्टि की आयु ही कितनी लम्बी कर दी है। नई दुनिया सो फिर पुरानी दुनिया बनती है। नई दुनिया को कहा जाता है स्वर्ग। पुरानी दुनिया को कहा जाता है नर्क। दुनिया तो एक ही है। नई दुनिया सतयुग में रहते हैं देवी-देवताएँ। वहाँ अपार सुख है। सारी सृष्टि ही नई होती है। अभी इनको पुरानी कहा जाता है। नाम भी है आयरन एज। ओल्ड वर्ल्ड। जैसे पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली कहा जाता है ना। बाप समझाते हैं मीठे-2 बच्चों नई दुनिया में फिर नई दिल्ली होगी। यह तो पुरानी दुनिया में ही कह देते हैं नई दिल्ली। इनको नई कहेंगे कैसे? बाप समझाते हैं नई दुनिया में नई दिल्ली होगी। उनमें ल॰ना॰ राज्य करेंगे। उसको कहा जावेगा सतयुग। तुम इस सारे भारत में राज्य करेंगे। तुम्हारी वदी(गद्दी) जमुना के किनारे होगी। पिछाड़ी में रावण राज्य की गद्दी भी यहाँ है। रामराज्य की गद्दी भी होगी। इसको परिस्तान कहा जाता है। फिर जो जैसा राजा होता है, वह अपने गद्दी का ऐसा नाम रखता है। इस समय तुम सारी पुरानी दुनिया में हो। नई दुनिया में जाने लिए तुम पढ़ रहे हो। पढ़ाने वाला है बाप। उनके लिए फिर कहना कि वह ठिक्कर-भित्तर में है, कच्छ-मच्छ अवतार लेते हैं, बाप कहते हैं कितने मूर्ख बन जाते हैं। कलियुग में सभी हैं अति मूर्ख, पत्थर बुद्धि। सतयुग में तुम पारस बुद्धि रहते हो। नाम ही है पारसनाथ। ऊपर में पारसनाथ है। पत्थरनाथ को पारसनाथ बनाने वाला कौन है? ऊपर गुरु शिखर पर जाओ तो वहाँ शिव का मंदिर है। वह बनाया भी बहुत ऊँच ते ऊँच है। यह मंदिर है यादगार। जिस शिवबाबा ने विश्व में शांति स्थापन की। कैसे की उनका पूरा मंदिर है। ऊपर से नीचे आकर तुमको राजयोग सिखाया, ऊपर छत में सारा स्वर्ग दिखाया है, तो ज़रूर बाप यहाँ आया है और आकर बच्चों को राजयोग सिखाया है। अभी तुम 21 पीढ़ी स्वर्ग में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। वहाँ अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। बेहद के बाप से 21 पीढ़ी का वर्सा मिल जाता है। अभी तुम हो संगमयुग पर, जबकि कलियुग पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अभी जनवरी से कहेंगे बाकी सात वर्ष। बाप ने इनका हिसाब भी बताया। मैं आता हूँ ब्रह्मा तन में। मनुष्यों को तो पता नहीं है कि कौन है। सुना है प्रजापिता ब्रह्मा। तुम प्रजा हो ना ब्रह्मा के। इसलिए अपन को ब्रह्माकुमारी कहलाती हो। वास्तव में शिवबाबा के बच्चे शिववंशी हो, जबकि निराकारी आत्माएँ हो। फिर साकार में प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हो। और कोई भी संबंध नहीं है। उस कलियुग संबंध को तुम भूलते हो; क्योंकि उनमें बंधन है। तुम जाते हो नई दुनिया में। ब्राह्मणों की चोटी छोटी होती है। सिक्ख को ब्राह्मण नहीं कहेंगे। चोटी ब्राह्मणों की निशानी है। सिक्ख लोगों की तो बड़ी चोटी है, तो बड़ा ब्राह्मण नहीं कहेंगे। यह तो तुम ब्राह्मणों का कुल है। वह है कलियुगी ब्राह्मण। ब्राह्मण अक्सर करके पण्डे होते हैं। एक धामा खाते हैं। दूसरे ब्राह्मण गीता सुनाते हैं। अभी तुम ब्राह्मण भी गीता सुनाते हो। वह भी गीता सुनाते हैं। फर्क देखो कितना है। उन ब्राह्मणों की है झूठी गीता; क्योंकि वह कहते हैं श्रीकृष्ण भगवानुवाच। तुम कहते हो कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। कृष्ण को तो देवता कहा जाता है। उनमें दैवीगुण है। उनको तो इन आँखों से देखा जा सकता है। शिव के मंदिर में देखेंगे, शिव को अपना शरीर है नहीं। वह है परमआत्मा अर्थात् परमात्मा। ईश्वर, प्रभु, भगवान आदि से कोई अर्थ नहीं निकलता। परम आत्मा माना परमात्मा अर्थात् वह सुप्रीम आत्मा है। तुम सुप्रीम नहीं हो। फर्क देखो कितना है तुम्हारी आत्मा और उस आत्मा में! तुम आत्माएँ अभी परमात्मा से सीख रहे हो। वह कोई से सीखा नहीं है। यह तो वण्डर है ना। उस परम आत्मा को हम फादर कहते हैं। टीचर गुरु भी कहते हैं। और कोई भी आत्मा बाप, टीचर, गुरु नहीं बन सकती है।

एक ही परम आत्मा है, उनको कहा जाता है फादर। बच्चों के लिए फादर है, तो टीचर भी चाहिए ना। एक ही फादर टीचर भी है, गुरु भी है। हरेक को पहले फादर चाहिए, फिर टीचर चाहिए। फिर पिछाड़ी को चाहिए गुरु। आजकल तो ठग लोग हैं, जो कहते हैं बच्चों को गुरु कराना चाहिए तो सद्गति हो जाये। नहीं तो गुरु हमेशा पिछाड़ी में किया जाता है। तो बाप भी कहते हैं मैं तुम्हारा बाप, टीचर भी बनता हूँ। मैं ही तुम्हारा सदगति दाता सद्गुरु भी बनता हूँ। सदगति देने वाला गुरु है ही एक। बाकी तो अनेक गुरु हैं। वह दुर्गति ही देते हैं। बाप कहते हैं मैं तो सभी का सद्गति दाता हूँ। तुम सतयुग में जावेंगे बाकी सभी शांतिधाम चले जावेंगे। शांतिधाम जिसको परमधाम कहते हैं। सतयुग में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। बाकी कोई धर्म है नहीं। और सभी आत्माएँ चली जाती हैं मुक्तिधाम। सद्गति कहा जाता है सतयुग को। पार्ट बजाते-2 फिर दुर्गति में आ जाते हैं। तुम ही पूरे 84 जन्म लेते हो। यथा राजा-रानी तथा प्रजा जो उस समय होंगे। नव लाख तो पहले आवेंगे ना। 84 जन्म तो नव लाख लेंगे ना। फिर दूसरे आते रहेंगे। यह हिसाब किया जाता है, जो बाप बैठ समझाते हैं। सभी 84 जन्म नहीं लेते हैं। फिर कम कम लेते आते हैं। मैक्सीमम है 84। यह जो बातें हैं, और कोई मनुष्य नहीं जानते। न सन्यासी, न गुरु, न टीचर आदि यह सुनावेंगे। न कोई शास्त्रों में ही लिखा हुआ है। न टीचर पढ़ाते हैं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। गीता में है भगवानुवाच। अभी तुम समझ गये हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म कोई कृष्ण ने नहीं रचा, यह तो बाप ही स्थापन करते हैं। कृष्ण की आत्मा 84 जन्मों के अंत में वह ज्ञान सुना, जो फिर पहले नम्बर में आया। यह बातें समझने की हैं। रोज़ पढ़ना है। तुम स्टूडेंट हो भगवान के। भगवानुवाच है ना। मैं तुमको राजाओं का भी राजा बनाता हूँ। यह है पुरानी दुनिया। नई दुनिया माना सतयुग। अभी है कलियुग। बाप आकर कलियुगी पतित से सतयुगी पावन बनाते हैं। इसलिए कलियुगी मनुष्य पुकारते हैं बाबा आकर हमको पावन बनाओ। कलियुगी पतित से सतयुगी पावन बनाओ। फर्क देखो कितना है! कलियुग में है अपार दुख। बच्चा जन्मा सुख हुआ। कल मर जावेगा दुख हो जावेगा। सारी आयु कितना दुख होता है। यह है ही दुख की दुनिया। अभी बाप सुख की दुनिया स्थापन कर रहे हैं। तुमको स्वर्गवासी देवता बनाते हैं। अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। उत्तम ते उत्तम पुरुष व नारी बनते हो। तुम आते ही हो यह बनने लिए। स्टूडेंट टीचर से योग रखते हैं; क्योंकि समझते हैं इन द्वारा हम पढ़कर फलाना बनेंगे। यहाँ तुम योग लगाते हो परमपिता परमात्मा शिव से, जो बैठ देवता बनाते हैं। कहते हैं मुझ अपने बाप शिव को याद करो, जिसके तुम शालीग्राम बच्चे हो। अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। वही नॉलेजफुल है। भक्तिमार्ग में झूठी गीता सुनते-2 तमोप्रधान बन गये हो। बाप फिर आकर सच्ची गीता सुनाते हैं; परंतु खुद पढ़ा हुआ नहीं है। कहते हैं मैं किसका बच्चा नहीं। कोई से पढ़ा हुआ हूँ नहीं। मेरा कोई गुरु नहीं। मैं तो तुम बच्चों का बाप, टीचर, गुरु हूँ। उनको कहा ही जाता है परमआत्मा। इस सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को जानते हैं। जब तक वह न सुनावे, तुम आदि-मध्य-अंत को समझ न सको। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी, इस चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा बनते हो। यह तुमको यह बाबा नहीं पढ़ाते हैं। इनमें शिवबाबा प्रवेश कर आत्माओं को पढ़ाते हैं। यह नई बात है ना। यह होते ही हैं संगम पर। पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगी। किनकी दबी रहेगी धूल में किनकी राजा खाये..... धणी बच्चों को कहते हैं बहुतों का कल्याण करने लिए यह पाठशाला, म्युज़ियम आदि खोलो, जहाँ बहुत आकर सुख का वर्सा पावेंगे। अभी रावण राज्य है ना। रामराज्य में था सुख। रावण राज्य में है दुख; क्योंकि सभी विकारी बन गये हैं। वह है ही निर्विकारी दुनिया। बच्चे तो इन ल॰ना॰ आदि के भी हैं; परंतु वहाँ है योगबल। बाप तुमको योगबल सिखलाते हैं। योगबल से तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। बाहूबल से कोई विश्व का मालिक बन न सके। लॉ नहीं कहता है। तुम बच्चे बाप से याद की बल से विश्व की बादशाही ले रहे हो। कितनी ऊँच पढ़ाई है। बाप कहते हैं पहले-2 पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। पवित्र बनने से ही तुम पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।